झारखंड का हिंदी-खोरठा पाक्षिक पत्र

आपन माटी आपन देश

झार न्यूज

रँची, सोमवार
01 से 15 अगस्त 2022
पेज : 06, मूल्य : निःशुल्क
वर्ष : 01, अंक : 03
झारखंड संस्करण
UDYAM-JH-19-0000800

jharnewskhortha@gmail.com

डिजिटल संस्करण

कुछ नशा तिरंगे की आन का है,
कुछ नशा मातृभूमि की शान का है,
हम लहरायेंगे हर जगह ये तिरंगा,
नशा ये हिन्दुस्तान के सम्मान का है।
ओम प्रकाश कुमार

भारत ने देखा विभाजन की विभीषिका का मंजर

आजाद भारत का 75वाँ वर्षगांठ | **13 अगस्त - हर-घर तिरंगा अभियान की शुरुआत** | **14 अगस्त - विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस**

प्रणय प्रबोध पाठक,राँची

15 अगस्त - भारत की आजादी के 75 साल और 76वाँ स्वतंत्रता दिवस

भारत की आजादी के 75 साल हो चुके हैं। इन 75 सालों में काफी कुछ बदला। पहले के चलन में जिन सामानों का हम उपयोग किया करते थे, उन सामानों ने तकनीकी रूप धारण कर लिया। जहाँ पत्राचार के लिए हम पोस्टकॉर्ड्स और तार का प्रयोग किया करते थे, जिसकी जगह मोबाइल फोन ने ले ली। जिस समय हम देशवासी अंग्रेजी हुकूमत के गुलाम थे। उस समय भी हमारे पास सबकुछ था। खेती के लायक जमीनें थी, रहने के लिए घर थे और रोजमर्रा का जीवन जीने के लिए पर्याप्त सामान भी। लेकिन अगर कुछ नहीं था, तो वो थी आजादी।

हमारा प्यारा भारवर्ष हमेशा से 'अतिथि देवो भव' की परंपरा अपनाते आया है। हमारे द्वार पर चाहे जो कोई भी आ जाए, लेकिन हम उन्हें भूखे–प्यासे नहीं भेजते। इसी का लाभ उठाकर विदेशी हमारे देश में घुसपैठिये की तरह घुस आए। धीरे–धीरे सूचनाएं देश के बाहर जाने लगीं। अंग्रेजी हुकूमत के लोगों की संख्या बढ़ने लगी और एक समय ऐसा आया, जब उन्होंने हमारे पूर्वजों को गुलाम बना लिया। उन्हें यातनाएं देने लगे, बैल की तरह कोल्हू में इस्तेमाल करने लगे। जानवरों की तरह कोड़े से पीटने लगे। घोड़े में बांधकर उस समय तक जमीन पर घसीटते रहे, जबतक जान न चली जाए। अंग्रेजों ने हमारे पूर्वजों को ही प्रताड़ित नहीं किया। बल्कि सोने की चिड़िया कहे जाने वाले इस भारत को खंड–खंड कर दिया। गरम दल, नरम दल और सुभाष चंद्र बोस जैसे जाबाज लोगों ने अंग्रेजी हुकूमत से लोहा लिया। सन् 1857 में मंगल पांडेय ने सिपाही विद्रोह कर दिया। यहां से हुई स्वतंत्रता के लिए लड़ाई की शूरुआत। धीरे–धीरे अलग–अलग दलों ने रणनीतियां बनानी शुरू की और उसे क्रियान्वित भी किया। तब जाकर हम 15 अगस्त 1947 को आजाद हो पाए हैं और आज भी हम उन्हीं की वजह से रात को चौन की सांस ले पाते हैं। जो हमारे लिए 24 घंटे सरहदों पर खड़े होकर हमारे प्राणों की रक्षा कर रहे हैं।

आजादी का अमृत महोत्सव

भारत के प्रधानमंत्री नरेद्र दामोदर दास मोदी ने 15 अगस्त 2021 को आजाद भारत के दिल्ली स्थित लाल किला पर झंडा फहरा रहे थे। जिसके बाद उन्होंने देश के नागरिकों को संबोधित किया। संबोधन के दौरान आजादी का अमृत महोत्व मनाने की घोषणा की। 15 अगस्त 2022 को आजाद भारत के 75 साल पूरे हो चुके हैं। जगह–जगह तिरंगा यात्राएं निकाली गयीं। कहीं बाइक तिरंगा यात्रा, तो कही तिरंगा पदयात्रा का आयोजन हुए। प्रधानमंत्री के आह्वाह्न पर भारतवर्ष के नागरिक एक माह पहले से 15 अगस्त 2022 का इंतजार कर रहे हैं। क्योंकि इस दिन आजादी के अमृत महोत्सव का एक साल पूरा होगा और इन एक सालों की उपलब्धियों को प्रधानमंत्री बताएंगे।

हर घर तिरंगा अभियान

आजादी का अमृत महोत्सव को बड़े स्तर पर मनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अभियान की शुरूआत की। उन्होंने 13 से 15 अगस्त तक भारतवासियों से हर घर में तिरंगा लगाने की अपील की। स्कूलों, कॉलेजों, प्रतिष्ठानों, घरों में तीन दिनों तक तिरंगा लहराने का अभियान चलाया। इसे नाम दिया 'हर घर तिरंगा अभियान'। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य सभी के दिलों में देशभक्ति की भावना को जगाना और किसी भी चीज से ऊपर सदैव भारत को रखना है। हालांकि अगस्त 2022 का माहौल बदला–बदला लगा। 'हर घर तिरंगा अभियान' को सफल बनाने में समस्त भारवासियों ने अपना योगदान दिया। 13 अगस्त की सुबह केन्द्रीय गृह मंत्री ने अपने दिल्ली स्थित आवास पर तिरंगा फहराया। जिसके बाद तमाम भारतवासी घरों में तिरंगा लगा रहे हैं।

अगस्त में बदल गया देश का नजारा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जब 'हर घर तिरंगा अभियान' की घोषणा की। उसी समय से देश का माहौल बदल गया। सबसे पहले देशप्रेमियों ने सोशल मीडिया में तिरंगा लहराया। व्हाट्सअप, फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम सहित तमाम सोशल साइट्स पर अपने प्रोफाइल फोटो और कवर पर तिरंगा लगाया। इसके बाद जगह–जगह बाइक तिरंगा यात्रा निकाली गयी। विभिन्न प्रदेश के लोगों ने हांथों में तिरंगा झंडा थाम पदयात्रा की। इन कार्यक्रमों के दौरान पूरा भारत देशभक्ति की रंग में रंग गया। एक ओर आजादी का अमृत महोत्सव पर सांस्कृति देशभक्ति कार्यक्रम, दूसरी ओर सोशल साइट्स में देशभक्ति, तीसरी ओर बाइक और तिरंगा पदयात्रा। इन सभी कार्यक्रमों के दौरान लोगों ने जमकर भारत माता की जय और वंदे मातरम् के नारे लगाए। जिससे पूरा भारत देशभक्ति नारों से गूंजयमान हो गया।

विभाजन विभिषिका स्मृति दिवस

भारत का विभाजन अभूतपूर्व मानव विस्थापन और मजबूरी में पलायन की दर्दनाक कहानी है। यह एक ऐसी कहानी है, जिसमें लाखों लोग अजनबियों के बीच एकदम विपरीत वातावरण में नया आशियाना तलाश रहे थे। विश्वास और धार्मिक आधार पर एक हिंसक विभाजन की कहानी होने के अतिरिक्त यह इस बात की भी कहानी है कि कैसे एक जीवन शैली और वर्षों पुराने सह–अस्तित्व का युग अचानक और नाटकीय रूप से समाप्त हो गया।

लगभग 60 लाख गैर–मुसलमान उस क्षेत्र से निकल आए, जो बाद में पश्चिमी पाकिस्तान बन गया। 65 लाख मुसलमान पंजाब, दिल्ली आदि के भारतीय हिस्सों से पश्चिमी पाकिस्तान चले गए। 20 लाख गैर–मुसलमान पूर्वी बंगाल, जो बाद में पूर्वी पाकिस्तान बना से निकलकर पश्चिम बंगाल आए। सन् 1950 में 20 लाख और गैर मुसलमान पश्चिम बंगाल आए। दस लाख मुसलमान पश्चिम बंगाल से पूर्वी पाकिस्तान चले गए।

इस विभीषिका में मारे गए लोगों का आंकड़ा 05 लाख बताया जाता है। लेकिन अनुमानतरू यह आंकड़ा 05 से 10 लाख के बीच है। इसलिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के रूप में मानाने का निर्णय लिया है।

दिल्ली के भाजपा कार्यालय में इससे जुड़ी प्रदर्शनी लगायी गयी है। ताकि लोग इतिहास के पन्नों को पलटकर उससे सीख लें और भविष्य में बेहतर रास्ता अख्तियार करें।

भारत की आजादी

करीब 200 सालों के लंबे संघर्ष के बाद सोने की चिड़िया कहा जाने वाला भारत अंग्रेजों के चंगुल से आजाद हुआ। अंग्रेजों की यातनाओं से परेशान भारतवासियों ने 15 अगस्त 1947 को स्वर्णिम युग देखा। तब जाकर कहीं भारत के विकास की परिकल्पना तैयार हुई। उन्हीं क्रांतिकारियों के संघर्ष का यह परिणाम है कि हम आजाद भारत में सुकून से साँसें ले पा रहे हैं। हमें उन वीर स्वतंत्रता सेनानियों पर गर्व करना चाहिए, जिन्होंने अपने प्राणों की आहूति देकर भारत माता की रक्षा की। अंग्रेजों से लोहा लेते हुए खुद तो शहीद हो गए, लेकिन भारत माता के गौरव को घटने नहीं दिया। आज उनके संघर्ष को याद करने का दिन है और उन्हें नमन करने का दिन है। आओ हम सब घरों में तिरंगा लगाते हैं, विश्व के मानस पटल पर अनोखा इतिहास रच जाते हैं। आओ मिलकर 15 अगस्त को हम भी तिरंगा फहराते हैं, तिरंगे की सम्मान में राष्ट्रगान दुहराते हैं।

झारखंड के सैकड़ो युवा हुए ठगी के शिकार

रोजगार के नाम पर कंपनी करती है ठगी | **सिन्हा ग्रुप पर धोखा, शोषण, ब्लैक मेलिंग और रोजगार के नाम पर ठगी का आरोप**

ओम प्रकाश कुमार,राँची

रांची : कोलकाता की एक कंपनी सिन्हा ग्रुप प्राइवेट लिमिटेड कंपनी पर गम्भीर आरोप लगा है. इस कंपनी के विरोध में पश्चिम बंगाल के कोलकाता स्थित विधुत नगर के सेक्टर 5 थाने में आवेदन दिया गया है. आवेदनकर्ता झारखंड समेत पश्चिम बंगाल के अलग–अलग क्षेत्र के निवासी है। आवेदनकर्ताओं ने कंपनी के साथ सिन्हा ग्रुप पर धोखा, शोषण, ब्लैक मेलिंग, रोजगार के नाम पर 25 हजार से 1.50 लाख तक ठगी जैसे सगिन आरोप लगाये है। आवेदनकर्ताओं का कहना है कि सिन्हा ग्रुप के वरीय अधिकारियों पर एफआईआर दर्ज कर पुलिस पूरे मामले की जांच करे। कंपनी उड्डयन मामले में तीन तरह के काम करती है। आवेदनकर्ताओ ने बोर्ड के सदस्य और कुछ पदाधिकारियों के नाम दिए है और उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग किया

है, इन नामो में विप्लव समानता, सुकरो ज्योति चटर्जी, सुषमा चौधरी, तृप्ति श्रीवास्तव, शाहिल खान, अभिषेक कुमार अन्य शामिल है।

रोजगार के नाम पर कंपनी करती है ठगी

आवेदनकर्ताओ का कहना है कि कंपनी

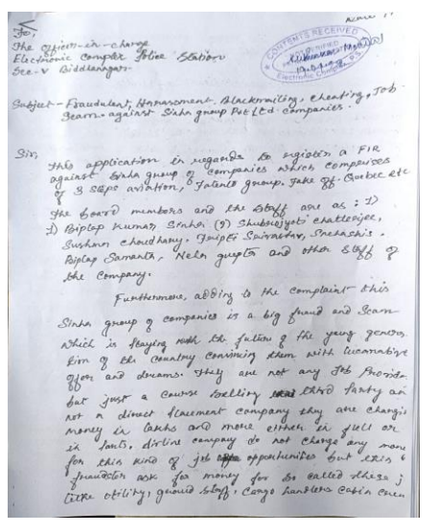

रोजगार का झांसा देकर लोगो के साथ ठगी करने का काम करती है कंपनी दावा करती है कि वो रोजगार देगी लेकिन सिर्फ एक छोटा सा कोर्स करवाती है। कंपनी लोगो से रोजगार देने के नाम पर डिपॉजिट करती है और कहती है, कि जैसे ही नौकरी लगेगी पैसा वापस कर दिया

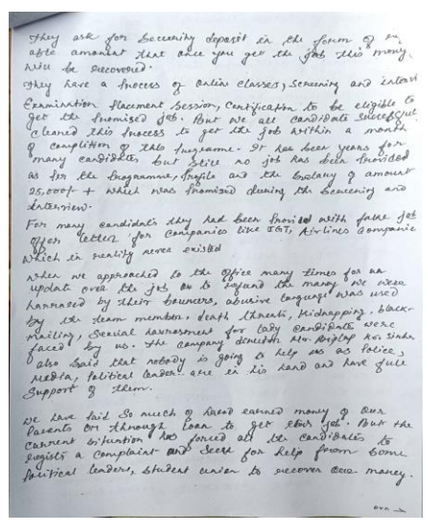

जाएगा। आवेदनकर्ताओ का कहना है कि कंपनी सबसे पहले साक्षात्कार करवाकर चयन करती है फिर ऑनलाइन और ऑफलाइन क्लास करने के साथ स्क्रिनिग कराने का काम करती है और आखिरी में लिखित परीक्षा के साथ फाइनल साक्षात्कार लिया जाता है. इनमें से कई अभ्यर्थियों ने सभी प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी कर ली है. लेकिन उन्हें नौकरी नहीं मिली इसके अलावा कई लोगो को फर्जी नौकरी के ऑफर लेटर दिए गए. उस ऑफर लेटर को लेकर जब अभ्यर्थि कंपनी पहूंचे तो उन्हें वहां पर मौजूद गार्डो ने मारपीट की और भाग दिया गया. अभ्यर्थियों ने अपने इंसाफ ले किए कानून का सहारा लिया है। अभ्यर्थियों की निगाहे अब सिर्फ स्थानीय प्रशासन के ऊपर टिकी है। इंसाफ नहीं मिलने पर न्यायालय का शरण लेने की बात कही। साथ ही कंपनी के अधिकारियों से कहा की आवेदनकर्ताओ को प्रदर्शन करने पर मजबूर न करें।

पूरे मामले पर कंपनी का क्या है कहना

इस पूरे घटना क्रम पर सिन्हा ग्रुप कंपनी के अधिकारी अभिषेक ने पहले तो इस तरह की शिकायत से इनकार कर दिया लेकिन बात के दरमियान उन्होंने कहा कि कंपनी सिर्फ अभ्यर्थियों को कोर्स करती है. और किसी तरह की नौकरी का वादा नहीं करती हैं।

ग्रामीण परिवेश की अनुभूति ने बनाया कलाकार : मनीष

प्रणय प्रबोध पाठक,राँची

मै गांव में रहता हूँ। एक ऐसे गांव में, जहाँ के लोगों का जीवन खेती पर निर्भर है। बचपन से अभाव को महसूस किया हूँ। इसलिए हर रोज संभावनाओं की तलाश करता हूँ। इसी संभावना की तलाश में एक रोज घर के दरवाजे की चौखट पर बैठा था। इसी बीच एक गतिविधि पर नजर पड़ी। हाँथ में पेंसिल थी और सामने कोरा कागज, मैंने उस गतिविधि को कागज पर आकार देने की कोशिश की। लेकिन लकीरें आड़ी–तिरछी हो गयी। फिर हर रोज गांव की गतिविधियों को बारिकी से देखता और उन्हें कागज पर उतारने की कोशिश करता। काफी समय तक तो टेढ़ी–मेढ़ी लकीरें खींच जाती। लेकिन मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं होती। काफी मेहनत के बाद मुझे भी सफलता मिलनी शुरू हुई। वर्तमान समय में कुछ ऐसी तस्वीरें और पेंटिंग्स बना रहा हूँ, जो लोगों को पसंद आ रहा है।

गांव से निकला कलाकार

झारखंड की राजधानी राँची से महज 55 किलोमीटर की दूरी पर तमाड़ प्रखंड है। जी हाँ, यह वही तमाड़ है, जहाँ दिउड़ी मंदिर स्थित है। इसी मंदिर में अक्सर भारतीय क्रिकेट टीम के बल्लेबाज महेन्द्र सिंह धोनी पूजा–अर्चना करने आते हैं। तमाड़ के चिरूडीह गांव के एक किसान परिवार में कलाकार मनीष कुमार महतो ने जन्म लिया। मनीष के पिता अश्विनी कुमार महतो पेशे से किसान हैं। वे मौसम के अनुसार फसल और सब्जियों का उत्पादन करते हैं। ग्रामीण किसान खेती कर साल भर का चावल और सब्जी तो उपजा लेते हैं। लेकिन बाजार में फसल और सब्जियों का उचित दाम नहीं मिलने से अभाव की जिंदगी गुजारनी पड़ती है। किसान परिवार में जन्म लेने के कारण मनीष को भी खेती करनी पड़ती है, लेकिन वह कभी निराश नहीं होते। बल्कि खेती में भी उन्हें आशा की किरण दिखाई पड़ती है।

ग्रामीण जीवन और आस–पास के परिवेश पर मनीष की पैनी नजर होती है। चाहे वह छोटी से छोटी गतिविधियां ही क्यों न हो? लेकिन उनमें भी मनीष कला ढूंढते हैं और समाज का श्रृंगार कला से कैसे किया जाए? इसकी चिंता करते हैं। तभी तो कभी थाली और लोटे की स्केचिंग, तो कभी माँ के आँचल के महत्व को पेंटिंग के जरिए दर्शाते हैं। ग्रामीण जीवन में किसान परिवार का प्रेम संबंध, रहन–सहन, खान–पान, खेती–बाड़ी, अनुशासित जीवन, सम्मानित आचरण जैसे विषयों पर तस्वीरें और पेंटिंग्स बनाते हैं।

कला के दम पर बनाई पहचान

मनीष की कला सिर्फ गांव तक ही सीमित नहीं, बल्कि झारखंड सरकार के शिक्षा मंत्री जगरनाथ महतो को भी उनकी पेंटिंग पसंद आयी। आजसू सुप्रीमो सुदेश महतो के जन्मदिन के मौके पर मनीष ने उन्हें पेंटिंग भेंट की। राज्यसभा सांसद खीरू महतो से मुलाकात कर उन्हें उनकी पेंटिंग भेंट की। मनीष ने सिल्ली के पूर्व विधायक अमित महतो की भी पेंटिंग बनायी है। इसके अलावा 1932 के खतियान आंदोलकारी जयराम महतो को भी पेंटिग भेंट की।

मनीष ने झारखंड के महापुरूषों, महानायकों और स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में भी गहन अध्ययन किया है। तभी तो कभी बिरसा मुंडा, तो कभी सिदो–कान्हू, कभी फूलो–झानो, तो कभी तिलका मांझी जैसे योद्धाओं का चरित्र चित्रण पेंटिंग के माध्यम से कर डालते हैं।

इनकी कलाकारी की बात यहीं खत्म नहीं होती, बल्कि मनीष ने तो पानी पर भी पेंटिंग बनानी शुरू कर दी है। इन्होंने पानी पर सुभाष चंद्र बोस और महात्मा गाँधी की पेंटिंग उकेर डाली। इस कलाकारी में मनीष ने मुख्य रूप से टब, पानी, साबुन, रंग और ब्रश का इस्तेमाल किया है। जिसे पेंटिंग की अलग विधा मानी जा सकती है। मनीष डिजिटल माध्यम का उपयोग कर पेंटिंग करने में भी सक्षम हैं। साथ ही फोटोशॉप का बेहतर ज्ञान है।

महज 23 साल की उम्र में भूगोल से स्नातक की शिक्षा प्राप्त करने वाले मनीष ने केवल भारत में ही अपनी कला का लोहा नहीं मनवाया। बल्कि ऑनलाइन माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भी भाग लिया। फाइन आर्ट्स में डिप्लोमा कर रहे मनीष के पेंटिंग की मांग भारत में तो है ही, साथ ही विदेशों में भी इनकी बनायी हुई पेंटिंग सुर्खियां बटोर रही हैं। हाल के दिनों में मनीष की बनायी हुई गणेश जी की पेंटिंग को विदेशी ग्राहक ने खरीदा है। मनीष की पेंटिंग को लोगों ने अपने कमरों की दीवारों पर लगाया है। जो कि लोगों के घर की शोभा को बढ़ाता है।

मनीष के राह का रोड़ा

मनीष कला के क्षेत्र में ऊंचाईयों को छूना चाहते हैं, लेकिन उनके सामने सिर्फ एक समस्या है, वह है अर्थ की समस्या। मनीष आर्थिक रूप से सक्षम न होने के कारण पेंटिंग बनाने वाले उपकरणों को भी काफी मुश्किल से खरीद पाते हैं। किसी प्रतियोगिता में भाग लेनी हो, तो इन्हें कई बार सोचना पड़ता है। इनकी इच्छा तो है कि ये कला के क्षेत्र में बेहतर करें, लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर होने की वजह से सोचा हुआ काम पूरा नहीं कर पाते।

करोड़ों युवाओं के प्रेरणाश्रोत

अभाव में संभावनाओं की तलाश करने वाले मनीष देश के करोड़ों युवाओं के लिए प्रेरणाश्रोत हैं। ये लोगों को यह सीख दे रहे हैं कि हमारे पास जो संसाधन उपलब्ध हैं, हम उन संसाधनों का प्रयोग कर अपने जीवन को नया आयाम दे सकते हैं।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में रही है रक्षाबंधन की भूमिका

आलोक मिश्रा, राँची

राँची : रेशम की डोर से बंध जाता है रिश्ता

रक्षाबंधन भारतीय धर्म संस्कृति के अनुसार सावन माह की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। यह त्योहार भाई–बहन को स्नेह की डोर में बांधता है। इस दिन बहन अपने भाई के मस्तक पर तिलक लगाकर दाएं हाँथ की कलाई पर रक्षासूत्र बांधती है, इसी रक्षासूत्र को राखी का नाम दिया गया है। यह मुख्य रूप से हिन्दू और जैन का त्योहार है। सावन मास में होने के कारण रक्षाबंधन के त्योहार को श्रावणी या सलूनो भी कहा जाता है।

रक्षाबंधन में राखी या रक्षासूत्र का सबसे अधिक महत्व है। राखी कच्चे सूत जैसे सस्ते सामान से लेकर रंगीन कलावे, रेशमी धागे और सोने–चांदी जैसे महंगी वस्तुओं से निर्मित होते हैं। रक्षाबंधन भाई–बहन के रिश्ते का प्रसिद्ध त्योहार है, रक्षा का मतलब सुरक्षा और बंधन का मतलब बाध्य है। रक्षाबंधन के दिन बहने भाई की सलामती की कामना करती हैं और भाई बहन की रक्षा का प्रण लेते हैं।

वृक्षों का रक्षाबंधन

वर्तमान समय में प्रकृति संरक्षण के लिए पेड़ों को राखियां बांधी जाने लगी हैं। वन विभाग की ओर से रक्षाबंधन कार्यक्रम का आयोजन कर पेड़ों की सुरक्षा के लिए उनका रक्षाबंधन किया जाने लगा है।

रक्षाबंधन की शुरुआत

हालांकि रक्षासूत्र बांधने की परंपरा पुरोहित और यजमान से शुरू हुई है। किसी भी पूजन के उपरांत आशीर्वाद स्वरूप पुरोहित यजमान को रक्षासूत्र बांधते आए हैं। इसी परंपरा ने रक्षाबंधन का रूप ले लिया है। वर्तमान समय में कोई भी किसी को भी राखी बांध सकता है। सनातन धर्म के सभी धार्मिक अनुष्ठानों में रक्षासूत्र बांधते समय कर्मकाण्डी आचार्य संस्कृत में एक श्लोक का उच्चारण करते हैं, जिसमें रक्षाबंधन का संबंध राजा बलि से स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। भविष्यपुराण के अनुसार इन्द्राणी ने स्वनिर्मित रक्षासूत्र को देवगुरु बृहस्पति ने इन्द्र के हाँथों बांधते हुए स्वस्तिवाचन किया था।

श्लोक

येनबद्धोबलिराजादानवेन्द्रोमहाबलरू।
तेनत्वामपिबन्धामिरक्षेमा चल मा चल।।

इस श्लोक का हिन्दी अर्थ– "जिसरक्षासूत्र से महान शक्तिशाली दानवेन्द्र राजा बलि को बाँधा गया था, उसी सूत्र से मैं तुझे बाँधता हूँ। हे रक्षे (राखी)! तुम अडिग रहना (तू अपने संकल्प से कभी भी विचलित न हो।)"

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में रक्षाबंधन की भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जन जागरण के लिए रक्षाबंधन का सहारा लिया गया था। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने बंग–भंग आंदोलन का विरोध करते समय रक्षाबंधन त्योहार को बंगाल निवासियों के पारस्परिक भाईचारे और एकता का प्रतीक बनाकर त्योहार का राजनीतिक उपयोग आरंभ किया। सन् 1905 में उनकी प्रसिद्ध कविता "मातृभूमि वंदना" का प्रकाशन हुआ। जिसमें वे लिखते हैं–

"हे प्रभु! मेरे बंगदेश के प्रत्येक भाई–बहन के उर अन्तरूस्थल, अविछन्न, अविभक्त और एक हों।"

सन् 1905 में लॉर्डकर्जन ने बंग भंग करके वंदेमातरम् के आंदोलन से भड़की एक छोटी–सी चिंगारी को शोलों में बदल दिया। 16 अक्तूबर 1905 को बंग भंग की नियत घोषणा के दिन रक्षाबंधन की योजना साकार हुई और लोगबाग गंगा स्नान करके सड़कों पर यह कहते हुए उतर आये–

सप्त कोटि लोकेर करुण क्रन्दन,
सुनेनासुनिलकर्जन दुर्जन,
ताइनिते प्रतिशोध मनेरमतनकरिल, अमिस्वजने राखी बन्धन।।

विभिन्न प्रदेशों में रक्षाबंधन त्योहार का नाम

उत्तरांचल में रक्षाबंधन को श्रावणी, महाराष्ट्र में नारियल पूर्णिमा, राजस्थान में रामराखी और चूड़राखी या लूंबा बांधने का रिवाज कहलाता है। तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र और उड़ीसा के दक्षिण भारतीय ब्राह्मण इस पर्व को अवनि अवित्तम कहते हैं। इस पर्व का नाम उपक्रमण भी है– जिसका अर्थ "नयी शुरुआत" है। इस त्योहार का संबंध राजा बलि से है, इसलिए इसे बलेव नाम से भी जाना जाता है।

परंपरा और रूढ़िवादिता

दिनेश दिनमणि

राँची : पहले से चले आ रहे रीति–रिवाज आदि को परंपरा कहते हैं। वह अच्छी या बुरी हो सकती है, या तटस्थ हो सकती है। जबकि रूढ़िवादिता वह होती है, जब अप्रासंगिक हो चुके रीति–रिवाज के प्रति दुराग्रह हो, उसे हर हाल में मानते रहने की ज़िद हो।

कोई परंपरा जिस समय आरंभ हुई या की गई थी, उस समय वह एक आवश्यकता थी। इसलिए तब के लिए अच्छी थी। पर, कालांतर में उसका औचित्य अप्रासंगिक हो जाता है, तब वह व्यर्थ या बुरी हो जाती है। उदाहरण के लिए विवाह अनुष्ठान में डालियों–पत्तों से मड़वा छारने की परंपरा एक आवश्यकता थी। सभ्यता के जिस दौर और परिवेश में इस परंपरा की शुरुआत हुई थी तब धूप और हल्की बारिश से बचाव के लिए आज की तरह वाटरप्रुफ पंडाल की उपलब्धता नहीं थी। तब सुलभ और उपयुक्त पेड़ों की डालियों टहनियों और पत्तियों से ही यह व्यवस्था की जाने की विवशता थी। वैसे ही, मड़वा के पास अधिक रोशनी के लिए चौमुखी दिये की परंपरा शुरू हुई थी। उसी तरह वर या कन्या के स्नान के लिए निकट के तालाब या नदी से कलशे में पानी लाना तात्कालिक आवश्यकता थी। क्यों कि तब स्नान आदि के लिए जल स्रोत वही थे। जहां तक लग्न बंधे वर/कन्या को जाना कई तरह के लौकिक–अलौकिक अनिष्ट की आशंकाएं थीं। तब ये सब आवश्यकताएं थीं। पर अब बदली परिस्थितियों में इसके लिए उन्नत विकल्प सुलभ हैं। फिर इन रीतियों को मानते रहना केवल परंपरा निर्वाह है। लेकिन इन्हें मानने की अनिवार्यता के प्रति दुराग्रह रूढ़िवादिता है।

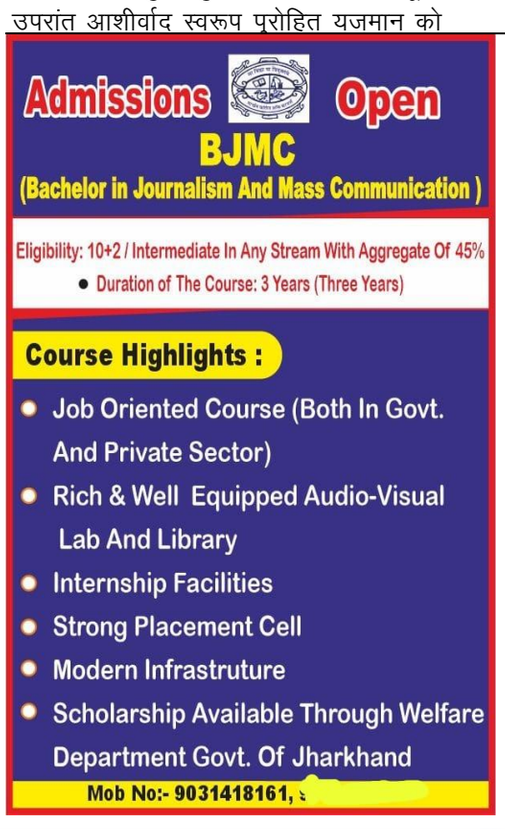

सड़क के अभाव में चली जाती है सांसे

प्रणय प्रबोध पाठक,राँची

भारत की आजादी के 75 साल हो चुके हैं। इन 75 सालों में देश ने काफी प्रगति की। भारत की आत्मा कहे जाने वाले गांवों के विकास के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय और विभाग बनाए गए। गांवों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और प्रखंडों में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों का निर्माण किया गया। लेकिन जमीनी हकीकत देखकर हम सिर्फ यही कह सकते हैं कि विकास गांव में आने से पहले रास्ता भटक चुका है।

ऐसा इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि झारखंड के ग्रामीण इलाकों की सच्चाई भी यही है। गांवों में रास्ते तो हैं, लेकिन सड़क का अभाव है। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में एम्बुलेंस की मौजूदगी तो है, लेकिन उस एम्बुलेंस को गांव तक ले जाने वाला कोई पहुंच पथ नहीं है।

यह जो दृश्य आप देख रहे हैं। इसकी सच्चाई सुनकर आपके आंखों से पानी निकलना लाजमी है। क्योंकि सिमडेगा जिला के बानोंप्रखंड के बड़काडुईल पंचायत के

छोटकाडुईल गांव में केवल रास्ता है, लेकिन कोई सड़क नहीं। लोग यहां पैदल तो पहुंच सकते हैं, लेकिन चार पहिया वाहन या एम्बुलेंस लाने की कोई सुविधा नहीं। इस तस्वीर में आप जिन पांच लोगों को देख रहे हैं, वोसुदूरवर्ती गांव में निवास करने वाले ग्रामीण हैं। जो कि एक प्रसूति को खाट पर लेकर अस्पताल की ओर जा रहे हैं। इस खाट पर प्लास्टिक इसलिए बांधा गया है, क्योंकि भारी बारिश हो रही थी। रास्ते में पत्थर और कीचड़ भरे थे। ऐसे हालात में दो लोगों ने खाट का एम्बुलेंस तैयार किया है। जिसे कंधे का सहारा देते हुए अस्पताल तक ले जाने का प्रयास कर रहे हैं। हांथों में डंडा केवल इसलिए है, ताकि ये वजन को संभाल सकें। आसपाल में चार अन्य ग्रामीण इसलिए हैं, ताकि जरूरत पड़ने पर ये स्थिति को संभाल सकें। ग्रामीण प्रसूति महिला को बानो सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले जा रहे हैं। हालांकि केन्द्र तक पहुंचने से पहले रास्ते में ही प्रसव हो गया और संसार में आने से पहले नवजात बच्चे की सांसें थम गयी। लेकिन ग्रामीणों के प्रयास से प्रसूति को बचा लिया गया। ग्रामीणों के मुताबिक गांव में पक्की सड़क नहीं होने के कारण एम्बुलेंस को गांव से बाहर खड़ा करना पड़ता है। जिसके बाद काफी दूरी तय कर किसी तरह से मरीज को एम्बुलेंस तक लाना पड़ता है। तब जाकर मरीज अस्पताल पहुंच पाते हैं।

जहां राज्य चहुमुखी विकास की ओर अग्रसर नजर आ रहा है। वहीं दूसरी ओर सिमडेगा के बानोप्रखंड से ऐसा दृश्य सामने आना, प्रशानिक महकमा, सरकार की चिकित्सा व्यवस्था, ग्रामीण विकास विभाग और पथ निर्माण विभाग के पदाधिकारियों पर सवालिया निशान खड़े करता है।

सरकार और विभागीय पदाधिकारियों को ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि आने वाले दिनों में सड़क के अभाव में फिर से किसी की सांसे सड़क के अभाव में न चली जाए।

झारखंड राज्य को अकाल क्षेत्र घोषित करे हेमंत सरकार : योगेन्द्र प्रताप

विशाल भारद्वाज , राँची

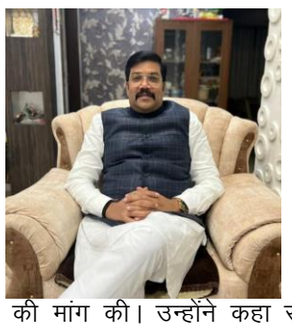

राँची : बीजेपी प्रदेश सह मीडिया प्रभारी योगेंद्र प्रताप ने झारखंड राज्य को अकाल क्षेत्र घोषित करने की मांग की। उन्होंने कहा राज्य में सामान्य से 50 परसेंट कम बारिश हुई है। यह राज्य के लोगों के लिए चिंता का विषय है। राज्य सरकार किसान हित मे काम नहीं कर रही है। काम के नाम पर केवल खानापूर्ति हो रहा है। राज्य के किसान परेशान है और सरकार चौन की नींद सो रही है। उन्होंने राज्य सरकार से भारत सरकार के मानक के अनुरूप तत्काल राहत के तौर पर 25000 रुपये प्रति एकड़ फसल की मुआवजा राशि, कम बारिश में होने वाली फसल उगाने की वैकल्पिक व्यवस्था, ऋण वसूली से फिलहाल राहत देने, डीजल में सब्सिडी देने सहित कई माँगों को रखा। योगेन्द्र प्रताप ने कहा भारत संरचनात्मक दृष्टि से गांवो का देश है और सभी ग्रामीण समुदायों में अधिक मात्रा में कृषि कार्य किया जाता है इसी लिए भारत को भारत कृषि प्रधान देश की संज्ञा भी मिली हुई है। लगभग 70 प्रतिशत भारतीय लोग किसान हैं। वे भारत देश के रीढ़ की हड्डी के समान है। खाद्य फसलों और तिलहन का उत्पादन करते हैं। वे वाणिज्यिक फसलों के उत्पादक है। वे हमारे उद्योगों के लिए कुछ कच्चे माल का उत्पादन करते इसलिए वे हमारे राष्ट्र के जीवन रक्त है। भारत अपने लोगों की लगभग 60 प्रतिशत कृषि पर प्रत्यक्ष या पपरोक्ष रूप से निर्भर भारतीय किसान पूरे दिन और रात काम करते हैं। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी किसानों के उत्थान के लिए लगातार काम कर रहे हैं। किसान हित के लिए मोदी जी का कार्य सराहनीय है। देश को इस पर गर्व है।

झारखंडवासियों को 76वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं ...

आचार्य पं. अशोक मिश्रा

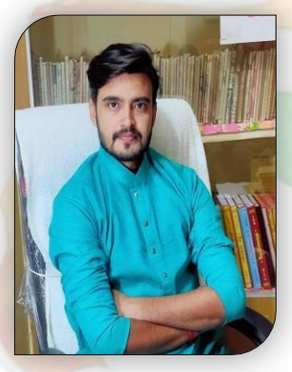

आलोक मिश्रा, पत्रकार

रीता मिश्रा

गौरव कुमार

अभिषेक कुमार, पत्रकार

मनीष पाठक

शिवम मिश्रा

सीपी सोलंकी
प्रदेश अध्यक्ष, छात्र राजद

पारशनाथ महतो
सहायक शिक्षक, राजकीय मध्य विद्यालय,आंगो

कैलाश राय सरस्वती विद्या मंदिर +2 उच्च विद्यालय
महात्मा गांधी नगर , झुमरीतिलैया

राकेश राय
प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष, आरपीआई

मनिका सिंहा
गिरीडीह

आकाश सरोज
मीडियाकर्मी

प्रेम प्रकाश
खोरठा शिक्षक

झार न्यूज परिवार की ओर से झारखंडवासियों को 76वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं ...

दिनेश कुमार दिनमणि
संपादक (खोरठा), झार न्यूज

अनाम अजनबी
संपादक (खोरठा), झार न्यूज

प्रणय प्रबोध पाठक
संपादक (हिन्दी),झार न्यूज

नवजीत सहदेव
संपादकीय सलाहकार, झार न्यूज

मनोज कुमार
उद्घोषक, झार न्यूज

विशाल भारद्वाज
सहयोगी ,झार न्यूज

विनोद कुमार
सहयोगी ,झार न्यूज

रवि कुमार महतो
संवाददाता ,झार न्यूज

दीपक प्रजापति
सहयोगी ,झार न्यूज

ओम प्रकाश कुमार
सदस्य ,झार न्यूज

दीपक कुमार
संवाददाता, झार न्यूज

कुलदीप कुमार महतो
सहयोगी ,झार न्यूज

संकल्प 'कोई पीछे न छूटे- 2030'

आकाश कुमार, राँची

राँची : 'कोई पीछे न छूटे– 2030', ये महज एक संकल्प ही नहीं बल्कि 2030 के लिए वैश्विक एजेंडा का मूलमंत्र सार्वभौमिकता का सिद्धांत है।

इस मिशन को जानने के लिए हमें कुछ 22 साल पीछे जाना होगा। वर्ष 2000 में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने एमडीजी यानी मिलेनियम डेवलपमेंट गोल्स का प्रस्ताव पारित किया था। इस प्रस्ताव के तहत वर्ष 2015 तक के लिए 8 वैश्विक विकास लक्ष्य निर्धारित किए गए। इस वक़्त 189 देशों तथा 22 अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों ने वर्ष 2015 तक इन 8 वैश्विक विकास लक्ष्यों की प्राप्ति का संकल्प लिया था। ये 08 विकास लक्ष्य हैं।

- •गरीबी और भूखमरी का उन्मूलन
- •सार्वजनिक प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य
- •लिंग समानता और महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहन
- •शिशु मृत्यु दर को घटाना
- •मातृ स्वास्थ्य में सुधार
- •एचआईवी, मलेरिया जैसी गंभीर बीमारियों से मुक्त होना
- •पर्यावरणीय सततता सुनिश्चित करना
- •विकास के लिए वैश्विक संबंध स्थापित करना

वर्ष 2015 तक इन सभी लक्ष्यों को पूरा करना था। लेकिन लक्ष्य पूरा न हो सका। ऐसे में एक नये नाम के साथ इसकी अवधि 2030 तक के लिए बढ़ा दी गई। नाम पड़ा, एसडीजी यानी सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स। सस्टेनेबल डेवलपमेंट से आशय वैसे विकास से है जो भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के हित से कोई समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की सभी आवश्यकताएं पूरी करता है। सस्टेनेबल डेवलपमेंट यानी सतत विकास के कुल 17 अंग हैं, जिसे सितम्बर 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की शिखर बैठक में 193 देशों ने अनुमोदित किया था। यह एजेंडा 01 जनवरी 2016 से प्रभावी हो गया। 2030 के इस वैश्विक एजेंडा का मूलमंत्र सार्वभौमिकता का सिद्धांत है "कोई पीछे न छूटे"।

- •सस्टेनेबल डेवलपमेंट के 17 निर्धारित लक्ष्य हैंरू
- • गरीबी को पूरी तरह से हटाना
- •भुखमरी को दूर करना
- • स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना
- • गुणात्मक शिक्षा
- • लिंग समानता
- • शुद्ध जल और स्वच्छता
- • वहनीय, विश्वसनीय और आधुनिक ऊर्जा की उपलब्धता
- • लचीली अवसंरचना विकसित कर आर्थिक विकास
- • औद्योगिक, नवाचार और आधारभूत संरचनाओं को बढ़ावा देना
- •असमानता कम करना
- • शहर–समुदाय को समावेशी, सुरक्षित, लचीला और संपोषनीय बनाना
- • ज़िम्मेदार उपभोग और उत्पादन
- • जलवायु परिवर्तन को लेकर जागरूकता
- • समुद्रों और समुद्री संसाधनों का संरक्षण
- • पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्रों का संरक्षण
- •शांतिपूर्ण–समावेशी सोसायटियों का संवर्द्धन, सबके लिए न्याय और सभी स्तरों पर जवाबदेही और समावेशी संस्थाओं का निर्माण
- •कार्यान्वयन के तरीके सुदृढ़ कर विकास के लिए वैश्विक भागीदारी

अगर भारत की बात करें तो सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स के प्वाइंट 12, 13, 14 और 17 भारत इंडेक्स में नहीं हैं। 2021–22 की रिपोर्ट के मुताबिक, सस्टेनेबल डेवलपमेंट का भारत इंडेक्स 66 फीसदी है। जहां केरल 75% के साथ टॉप पर है, वहीं बिहार 52% के साथ सबसे निचले पायदान पर है। अगर केंद्र शासित प्रदेशों पर नजर डालें तो चंडीगढ़ 79% के साथ टॉप पर है, वहीं 62% के साथ दादर–नगर हवेली और दमन–दीव सबसे निचले पायदान पर है। इन सभी आंकड़ों को इकट्ठा करने की जिम्मेवारी छप्ज्प् आयोग को दी गई है। भारत में मेक इन इंडिया, स्वच्छ भारत अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, प्रधानमंत्री आवास (ग्रामीण एवं शहरी), राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, डिजिटल इंडिया, उज्ज्वला योजना, उजाला योजना जैसी बहुत सारी योजनाएँ चल रही हैं, जिनके द्वारा भारत सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लक्ष्यों की प्राप्ति की राह पर अग्रसर है।

कविता

हमारी जान तिरंगा,
हमारा स्वाभिमान तिरंगा,
हर घर लहरे तिरंगा,
घर– घर सजे तिरंगा,
तीन रंगों से बना,
सबसे ऊंचा तिरंगा....

नदियों के उद्गम पर तिरंगा,
पर्वतों के शिखर पर तिरंगा,
खेतों की मेड़ों पर तिरंगा,
चांद की धरती पर लहराता तिरंगा...हमारी जान तिरंगा,
हमारा स्वाभिमान तिरंगा...

भारत के हर आंगन में तिरंगा,
भारत के हर कानन में तिरंगा,
भारत के हर जन के घर में तिरंगा,
भारत के कण–कण में लहराता तिरंगा...हमारी जान तिरंगा,
हमारा स्वाभिमान तिरंगा...

उँचे महलों की शान तिरंगा,
नीचे कस्बों की आन तिरंगा,
कश्मीर से कन्याकुमारी तक
भारत के घर–घर में लहराता तिरंगा...हमारी जान तिरंगा,
हमारा स्वाभिमान तिरंगा...

सबको एक सूत्र में पिरोता तिरंगा,
अमृत महोत्सव का उदघोष करता तिरंगा,
वीरों की आन बान शान तिरंगा,
जण गण मण का जयघोष करता तिरंगा....हमारी जान तिरंगा,
हमारा स्वाभिमान तिरंगा...

पुष्पा सहाय'गिन्नी'
रांची, झारखंड

जिंदगी

टुटे हुए सपनो की सिसकी कौन सुनेगा।
आँखों के पीछे दबे दर्द को कौन पढ़ेगा।
भुख से फैली हथेली कौन सुनेगा।
मुट्ठी भर अनाज हथेली में कौन भरेगा।

यहां कदम –कदम पर तानो का तीर चलता है।
भला इसे वेवजह कौन सहेगा।
जब यहां ठोकर अपने दे
तो भला गैरो से रिश्ता कौन रखेगा।

इस खूबसूरत होठो पे ना जाने कितने कहानियां है।
जो समझे ना कोई
भला फिर इसे बता कर कौन वक्त जाया करेगा।
जो समझे न हमे

ना पढ़े मेरी खामोशियों को
वो भला जरूरत में क्या साथ देगा ।

नीतू यादव

स्वतंत्रता दिवस के सुभ बेरा में गोटे झारखंडिया के हियाखलास बधाई...

डा.बी.एन.ओहदार,
निदेशक, खोरठा साहित्य -संस्कृति परिषद्, झारखण्ड

कुमारी शशि
विभागाध्यक्षा स्नातकोत्तर विभाग खोरठा राँची विश्वविद्यालय, राँची

डॉ.गजाधर गजाधर महतो प्रभाकर
खोरठा साहित्यकार भुरकुंडा , रामगढ़

विक्की कुमार
संयोजक, खोरठा साहित्य -संस्कृति परिषद्, जिला-राँची

लंबोदर महतो
गोमिया विधायक, आजसू

अम्बा प्रसाद
विधायक, बड़कागांव

विनय तिवारी
खोरठा गीतकार

ममता देवी
विधायक, रामगढ़

घनश्याम महतो

सावित्री देवी
सेविका , आंगनबाड़ी केंद्र रिकवा

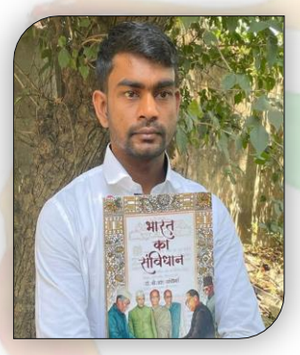

जयराम महतो
खातियान आंदोलनकारी

खोरठा साहित्य -संस्कृति परिषद्, झारखण्ड

कविता

हामनिक संसकिरति

हामनिक समाजे रीत चलल हइ
हिंयाक संसकिरति से जुड़ल हइ
आर अइन राइज ले फरक हइ
परनाम आर जोहार एहे बनल हइ

हामनिक माय माटी से जुड़ल हइ
हिञाक संसकिरति ले पियार हइ
मडुवाक लेटो जोंड़राक घाठा
पुआ संगे आरो अइरसापीठा

हिया नाना रकमेक सवाद हइ
हामनिक संसकिरति ले पियार हइ
घोड़ा, झुमइर, जदुर नाच
झुमटा, पाइका, नटुआ नाच

देखा आरो कतेक नाच हइ
एकरे में संसकिरतिक पहचान हइ ।
संथाली कुडुख मुंडारी हो आर खड़िया
खोरठा नागपुरी कुरमाली पंचपरगनिया

एहे त हइ झारखंडेक नउरंगीया
मिली मिसी राखिया एके संगीया
एकरे में हमनिक चिन्हाप हइ
हामनिक संसकिरति ले पियार हइ

सरना सरहुलेक पूजा करब
सोहराय आर करमाक गरब
एहे त झारखंडेक परब
जेकरा कहियो नाइ छोड़ब

एकरे में हमनिक आन–बान–सान हइ
हामनिक संसकिरतिक एहे पहचान हइ ।।

बसंत कुमार
खोरठा शोधार्थी

खोरठा कहनी : किसानेक दसा

(ई घटना किसानेक आबगा पहरेक बेरा देइख के लिखल गेल हे।)

संदीप कुमार महतो , खोरठा शोधार्थी

पात्र परिचय :

1.मरद पात्र - सोमरा (एगो चासा (किसान)

2.जनी पात्र - बुधनी आर रुसनी (चासाक दुगो बेटी)

जगह – घरेक आंगना मे दुइयो छउवा खेइल रहल हथ ।

बुधनी - इचीक – मीचीक दांत कीचीक,
लोवा लाठी चंदन काठी ।। 2

रूसनी - दीदी इटा खेइल दृखेइल के हाम आनसाइ गेल ही चल न दोसर खेल खेलबुइ नुक– नुकोली ।

बुधनी – (तनी दुखेक भाव से) नाञ– नाञ हामे नुक – नुकोली नाइ खेलबो ! इटा खेलले हामरा मायेक इयाद आय जा हे ! जान्हीये हामे जेठीन– जेठीन नुकाहलीये , माये हामरा उठीन ले खोइज ले हली ।

रूसनी - हां तबे चल गुली दृढांग खेलब।

(दूइयो छउवा गुली दृढांग खेलेक तइयारी करे लागऽहथ, तइसी ओखीनेक बाप (किसान) हांथे एगो कोदाइर लइके आइ जा हे ।)

सोमरा - केतना बेइर मना करल हियोन , की ई खेइल टा नाइ खेलबाइ ! आंइखे लाइग जीतोन ।

बुधनी - भाभना नाइ करे बाप !

(रूसनी ठांवे राखल लोटी से पानी दइ रहल ही , सोमरा कोदाइर के राइख के पानी पीयल – पीयल बइठ जा हे , आधा पानी बाचायके बेटी के दइ रहल हे ।)

सोमरा - लइ जो, बाकी के खेतें डाइल देहीं, हइसके हे एक – दु मुठा धान टाव होइ जीतइ द्य अबरी त बस ओकरे आस हे।

रूसनी - की बाप ? कखनु पानीक आस, कखनु धान बेचाइक आस , आर कखनु सरकारेक करजाक आस.. छोइड काहे नाइ देही ई खेती– बारीके ?

सोमरा - भुखे मइर जीता गोटा लोक जदी किसाने हार – फार करले छोइड़ दइ त ! खोंखते– खोंखते .....स

बुधनी - की बाप ? आइजो तोञ दवाइ नाइ खाइल हले ! तोरा कहल रहियो न कि खायेक बादे दवाइ टा खाइ लेबे ।

रूसनी : खायेक ! ....खायेक टाव त दवाये एतना मिले हेना बाप .....स

सोमरा : चासाक दरदेक दवाइ त केकरो पास नाइ हे ...बेटी .... खइर छोइड़। बोइल की की खायबाइ..... ?

बुधनी – बाप गो .....घरे जते ठांञ –ठेना सब छुछे राखाइल हो।

रूसनी – बाप ...गो ...वइसे हामरा भुख लागल नाइ हे ।

सोमरा – ओ ....हो ... भुख नाइ लागल होन ! हामरा त साकताइ के भुख लागल हे । हाम त मडुवाक रोटी खाइब, मडूवाक रोटी .....स

(दुइयो एक संगे दोइड के गोहाइर करले आवऽहथ)

बुधनी आर रुसनी – मडुवाक ...रोटी .....स

सोमरा – आवा ... आवा हामर दुलारी बेटी सब ..... स

(सोमराक दुइयो धाइरे बइठ जा हथ । दूइयो के खियाइ रहल हथ । खाइल बादे दूइयो के निंदावे लागल हथ।)

सोमरा : चल सुइत जा ! तोहीन दुइयो के बिहाने चाढ़े उठेक होन ।

बुधनी : की ले बाप ?

सोमरा : सवाल नाइ करेक लाय बेटी....स

(दुइयो के सुताइ रहल हे आर ओखीनेक मुड़ के हसइत रहल हे)

हामर दुलारी छउवा .....स

(सोमरा हुंवा से उइठ जा हे। आपन ढाडा से मोबाइल बहराइ के करे दृकरे बात करे हे)

हा साहेब ! काइल हामर दइयो बेटी .....सहा ..

(दुइयो छउवा उइठ के बइठजा हथ)

ओ ..हो ... भाभना नाय करा ! हाम सोब समभाइल लेब.....! हा जी धइनबाद ।

(दुइयो छउवा बापेक ठांव आय जा हथ आर बाप के धइर ले हथ।)

बुधनी : बाप .. .बाप गो ! की तोञ हामनिके दोसर ठेकाने भेइज रहल हे ।

रूसनी : अइसन नाय करीहें बाप .... अइसन नाय करीहें ....स

बुधनी : हा बाप .... ! हामीन तोर कहल सब बात के मानब ।

रूसनी : हा बाप हाम तोर लुगा दृफाटा , ठाञ दृ ठेना सभे साफ कइर देबो ।तावो तोञ हामनीके दुर नाय भेइज बाप ।

बुधनी : बाप ...गो हामीन तोर से भिनु नाय रहे पारब ! बाप ...स

(दूइयो छउवा कांधे लागऽ हथ ।)

सेमरा : नाय बेटी ...। तोहीन के त जमजमाय के पढ़ेक होन । हामे तोहनिक खातिर सहरेक सबले बोड इसकुले
नाम लिखाय देल हियोन आर ओकर फिसो भइर देल हियोन । तोहीन के हामर भाभना करेक दरकार नाय
होन ।हाम त कोन्हो काम से ढेइर दुर जाय रहल ही । तोहीन दुइयो त हामर चेठगर छउवा लागाय । चाला !
चइल के सुइत जा! हामर दुलारी बेटी लागाय न ।

(दूइयो छउवा सुइत जा हथ आर सोमरा आगु आवे)

सोमरा : हाम डरपलुका नाय लागी ! आर न हाम डेराही । हामर ठांवे कोन्हो बाचल नाय हे , छउवा पढवेक खातिर
आपन सोब जमीन बेइच देलीये ! ताकी हाम आपन छउवा सब के पढाय सकऽही । हाइर नाय मानल रहीये। हामे चासा लागी न हाम , चासाक ठांवे त सब समअसीया कर डहर हेवे हे ! मकीन हामर समअसीयाक डहर केकरो पास नेखय । गाते दवाय मांगऽहलय, आर दवाय पइसा मांगऽ हलय, हाम लागी एक किसान सिवाय मोउत कर आर कुछो नाय मांगे पारलिये ।

(परदाक पेछु ले)

अइसने हामर देसेक कते चासा जाकर खेते खेती नाय हेवे हे । ओकर जिनगी मे आबगा दुखे – दुख हवे हे। कोन्हो चासा कधीयो दुखे नाय मोरे हे ! मेरावे हे त ओकर परिस्थितियाँ, अइसने घटना हामर चासा परधान देस के खडहर कइर देल हे । त आवा हामीन मिइल के एगो बात के ठानऽ ही की भारतेक चासा खातिर हामीन तनी कुछ सोचब , तनी कुछ करब ताकी आवे दिनेक पुरखा से अइसन घटना सुने आर देखे नाइ पाइब।

कविता

चल एगो काम कर

चल एगो काम कर
जीटी रोड़ जाम कर
माँग जवाब,ले हिसाब
मिलके उलगुलान कर।
हमरे भोटें तोञ उड़े हे,
टेक्स कर नोट तोञ लूटे हें
हमें थसा ही कदो–माटी
तोञ दुलरुआ बइन के घुरे हें
किरिया खाहें पक्का काम के
काँचकहो नाञ करे हें
जीत गेले फन आड़े हे
ससमंगर ढ़ब अडे हे
हमनिक देइख ,मुँह नुकावे
हमनिक माँग आर काम पर
चल एगो काम कर
जीटी रोड़ जाम कर।।

ऐसे नाञ मानबथुन नेता
एखनिश्क जीना हराम कर
बड़ी थारी–लोटा मांजलें
नस्ता पानी बड़ी करयलें
हाथ जोइड़ के नेतवन के
नाञ घुरी–घुरी परनाम कर।
हटाव झंडा ,निकाल डंटा
अब सबके काम तमाम कर
रगद गाँव से,आपन ठांव से
बलगर बन ,रह तनतन
ललचाहा भ्रष्ट नेता ठिन
बिक नाञ दाम पर
चल एगो काम कर
जीटी रोड़ जाम कर!!!

अनिता महतो
शिक्षिका सह राष्ट्रीय कवित्री

गोटे भारतवासी (झारखंडी) के आजादी के पचहतरवा अमरित महोत्सव के हियाखलास बधाई आर सुभकामना...

हामर सान तिरंगा
हामर मान तिरंगा
काइल तक इसकुले तिरंगा
आब से घार दुवार तिरंगा ।

गुलांचो कुमारी
शिक्षिका, उत्क्रमित उच्च विद्यालय
भुरकुंडा,डाड़ी, हजारीबाग।

स्वतंत्रता दिवस के सुभ बेरा में गोटे झारखंडिया के हियाखलास बधाई...

बिनोद कुमार महतो 'रसलीन'
पंचायत समिति सदस्य सह खोरठा लोककलाकार, सिंहपुर, बोकारो

स्वतंत्रता दिवसे खोरठा भासा - भासी सब के हियाखलास बधाई आर सुभकामना।

संदीप कुमार
जेआरएफ, खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आजादीक अमृत महोत्सव कर बधाई...

उज्वल कुमार (रॉकी)
खोरठा कलाकार

15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस में सभे के हियाखलास बधाई।

कुमारी आकांक्षा
बगदा, कसमार, बोकारो

आजादीक 76 वीं सालगिरह कर अबसरे गोटे देसेक लोक के हियाखलास बधाई आर सुभकामना...

कुमार मोतिक
उपाध्यक्ष, खोरठा मांय माटी (उलगुलान)

15 अगस्त कर सभे के बधाई..

आँचल कुमारी
बीए. खोरठा, जमीरा, रामगढ

आजादी दिवस कर बधाई...

अशोक कुमार रजक
दुधारी, चास बोकारो

जंगली परिवार बाठे ले सभे खोरठा परेमी सोब के आजादीक अमृत महोत्सव कर ढइरे -ढइर बधाई आर सुभकामना

शालिनी ओहदार
चेटर, गोसा, रामगढ

स्वतन्त्रता दिवसेक अवसरें झारखण्डी भाइ-बहीन सब के हियाखलास बधाई...

माणिक चंद्र
खोरठा शोधार्थी
रांची विश्वविद्यालय रांची

आजादी के 75 वीं बछर गांठ के सुअवसरे पर समस्त खोरठांचल वासियो को स्वतंत्रता दिवस की हिग्रा खलास जोहार बधाई आर शुभकामनाएँ

थानेश्वर महतो
खोरठा शोधार्थी सह् अध्यक्ष,
खोरठा छात्र संघर्ष मोर्चा झारखण्ड प्रदेश

आजादी के 75 वां बछर गांठ के सुअवसरें को स्वतंत्रता दिवसेक हिया खलास जोहार बधाई आर मंगलकामना

गौतम कुमार महतो
खोरठा लोक गायक , बोकारो

15 अगस्त स्वतंत्रता दिवसेक अवसरें खोरठा भासा भासी सब के हियाखलास बधाई आर सुभकामना

कुमारी अनिता भारती
खोरठा शोधार्थी,स्नातकोतर खोरठा विभाग, राँची

सभिन देस वासी के हामर दने से हियाखलास बधाई आर खाँची भइर सुभकामना...

सूचित कुमार राय
रिसर्च स्कॉलर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय रांची

आजादी के अमृत महोत्सव के सुभ अवसर पर खोरठा भासा भासी आर सभीन के खुभे बधाई आर जोहार

कुमारी कंचन बर्णवाल
रांची महिला महाविद्यालय

स्वतंत्रता दिवस की समूवे झारखंडवासी आर देशवासी के इस आजादीक अमरित महोत्सव में सबके हियखलास बधाई आर शुभकामनाएं..

डॉ॰ आजाद वर्णवाल

आजादी के अमरित महोत्सव के सुभ अवसरें तोहिन सोबके हामर दने ले सोतंत्रता दिवस कर हारदिक बधाई आर सुभकामनाएँ..

डॉ.अहिल्या कुमारी
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर ,राम लखन सिंह यादव महाविद्यालय कोकर, राँची

'कर-ही हाम भारत से प्यार
स्वतंत्रता हे हामर अधिकार' !!
स्वतंत्रता दिवसेक हियाखलास बधाई आर शुभकामना

गोपाल राम मुण्डा
अकाउंट कलर्स प्रखंड कार्यालय
पेटरवार बोकारो

आजादी के अमरित महतसव के सुभ बेरा में गोटे रामगढ़िया के 15 अगस्त शुभ कामना आर हिया खलास बधाई

रूपेश महथा
आजसू पार्टी जिला संगठन सचिव आजसू पार्टी , कुम्हरदगा

स्वतंत्रता दिवसे गोटे भारतवासी के हियाखलास बधाई आर शुभकामना

डॉ. रितु घांसी
खोरठा शिक्षक उत्क्रमित उच्च विद्यालय काटमकुल्ही,पेटरवार

आजसू पार्टी बाठे ले सवंत्रता दिवस के हिया खलास बधाई आर सुभकामना

संतोष कुमार महतो
कार्यकारिणी अध्यक्ष आजसू पार्टी, ओबीसी मोर्चागोला, रामगढ

सवंत्रता दिवस के हिया खलास बधाई आर सुभकामना...

आयुष आदर्श
गिद्दी, हजारीबाग

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

जतरु महतो
डिपार्टमेंट ऑफ राधा गोविंद यूनिवर्सिटी रामगढ़ झारखंड

सभे हज़ारीबाग़ आर रामगढ़िया भाय बहिन के 75वां आजादी के अमृतमहोत्सव के हाथ जोड़ी हियाखलास जोहार .....

चित्रदयाल महतो
सहायक प्राध्यापक भूगोल विभागराधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़

आजादी का 75वे अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य मे समस्त देश वासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

अनिल कुमार केशरी
सहायक प्रोफेसर वाणिज्य विभागराधा गोविंद विश्वविद्यालय रामगढ़

भारतेक स्वतंत्रताक 75 बछर हेवेक अवसरे हमर बठले खोरठा भासा-भासिक सउभेक ढेइरे बधाई

बसन्त कुमार
खोरठा शोधार्थी स्नातकोत्तर खोरठा विभाग, राँची विश्वविद्यालय राँची

भारतेक आजादीक दिनेक अवसरे खोरठा भासा-भासिक हमर बठ ले सउभेक हिया खलास बधाई

मालती कुमारी
खोरठा शोधार्थी स्नातकोत्तर खोरठा विभाग , राँची विश्वविद्यालय राँची

बिनोद कुमार महतो
खोरठा लोकगायक , मढुदा, धनबाद

मुंशी कुमार
प्रभारी प्राध्यापकउत. उच्च. वि.
धवैयागोमिया, बोकारो

रमेश कुमार महतो
खोरठा कवि, सिंहपुर, बोकारो

अशोक कुमार महतो
आधुनिक खोरठा लोक गायक सह, अध्यक्ष, जागो जगाओ सांस्कृतिक कला मंच,सिंहपुर, बोकारो

कविता

कफन

काईल तक उ गरीब हेलक
लाचार हेलक, बेबस हेलक
भूखे हेलक, लंगटा हेलक
दर दर के ठोकर खा हलक।

मकुन आइझ बड़ी अमीर हे
ओकर पास धन –दौलत हइ
गाड़ी हइ, घोड़ा हइ
आर नौकर– चाकर हइ।

उ नाय तो चोर लागेक
ना उ कोई डकइत लागेक
ना ही कोई बड़का नेता लागेक
ना ही कोई अभिनेता लागेक।

आर ना ही जुवारी लागेक
उ तो कफन के बेपारी लागेक।

अनाम अजनबी

आइझ गोटे हिन्दुस्तान लइ बड़ी खुसिक आर गरब के दिन हइ।आइझ हमिन पचहतरवां स्वतंतरा दिवस मनाइ रहल हीं,आइझेक दिन भारत माताक जंजीर के बेडी उखाइर के फेंकेम भारत के महामानव महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, नेहरू,तिलक, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव भगत,असफुल्ला खां, जइसन हजारों महापुरुष आपन जान दइलक आपन जीवन समरपित कइर देलक। ई आजादी हजारों- हज़ार महामानव के बलिदान के परिनाम हके सइ ले हमिन एगो नवां संकल्प के साथ एकरा आगु बढइक जिगिसता करब आर भारत के सामाजिक,सांस्कृतिक, आर्थिक समानता के विकास में आपन सहजोग करब।

आजादी के कखनो बेरिया नाइ डुबे दबइ,
सहीद जबान सोब केबदनाम नाइ हवे दबइ,
हमर देह में जब तक बाचल रहतइ एक भी कतरा खुइन तखन तइक आपन देस के निलाम नाइ हवेल दबइ..
जय झारखण्ड जय भारत

डॉ. अजय कुमार
सहायक प्राध्यापक
खोरठा भाषा विभाग
डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची

सोभे झारखंडे खोरठा बोलवइया बाप-दादा, मॉञ, भाइ-बहिन के आजादिक हिया खलास बधाई

धन धनाय के धनइक उठे झारखण्डेक नगाडा,
चम चमाय के चमइक रहल हे देसेक आखातीज।
आजादिक दिन हे देहर आरो स्वाभिमान,
बुलंदीक उपरे चइढ लहरतइ हमनीक तिरंगा।

हमरा दही चाही ना चाही धान,
बस नीक सुखे रहे भरल वतन।
जिन्दा ही तो भारत मॉञ् खातिर,
आर मोरब तो चाही तिरंगाक कफन।

नागेश्वर कु॰ महतो
शिक्षक,डाडी,हजारीबाग

कविता

शीर्षक–भाखा

हाम लागी भाखा, भाखाक मान जोगाय राखा
हामर नजइर चाइरो दन, तनी ओनाय के देखा।
ओहाइर कइर के देखा, गोहाइर कइर के सुना।
साड़ा ही सबद ही , उ तो हाम्हीं लागी भाखा

ओनाइ के सुना, नजइर गबचाय के देखा
डेढ़ करोड़ लोकेक, जीवेक भीतरे हामर बासा।
आर आइझ देइख ले हे, हामर इ दासा
आझुक नउतन छउवा, हेंरावला हामर दिसा।।

हामर छेतर चंउतीस हजार ले बेसी ।
आर बोले खातिर मुंहे माटी लेला लेसी।।
धीक रे धीया पुता, खाटी छोड़ी भुंयें सुता।
ताव भासा बचवेक, करा उता सुता ।।

हामर मान गोटे उत्तरी छोटानागपुरे
ताकर पढ़ा–सुना होवइ, दक्षिणी छोटानागपुरे
चला, चला, चला, नउतन डहरे
जेकर पढ़ा सुना होवइ सगरे

डॉ रितु घाँसी (खोरठा शिक्षक)
उत्क्रमित उच्च विद्यालय
काटमकुल्ही, पेटरवार

वर्ष :01, अंक : 03, रजिस्ट्रेशन : UDYAM-JH-19-0000800, संपादक (हिंदी): प्रणय प्रबोध पाठक, संपादक (खोरठा): डॉ दिनेश कुमार दिनमणि, अनाम ओहदार, संपादकीय सलहकार : नवजीत कुमार सहदेव, फोन : संपादक 7717748632, विज्ञापन : 9199255612, प्रसार विभाग : ओम प्रकाश कुमार, 9199255612, ई मेल : jharnewskhortha@gmail.com, सुझाव या शिकायत khorthajharnews@gmail.com पर मेल करें।